

## शिक्षकों के प्रदर्शन मानक

सामान्य शिक्षणविधि

**बच्चे सीखें इस लिये आवश्यक है कि कक्षा में बच्चों की सहभागिता झलके, उन्हें सीखने के लिये मौके मिलें, और नयोजित तरीके से सीखना सुनिश्चित हो। इसके लिये शिक्षक अपनी कक्षाओं में बच्चों के लिये भयमुक्त और खुला माहौल रच कर गतिविधि आधारित शिक्षण की ओर बढ़ सकते हैं। शिक्षणविधि के तीन प्रमुख पहलुओं पर सूचक बनाये गये हैं:**

- सहज सम्बंध एवं आकर्षक माहौल
- गतिविधि आधारित शिक्षण की ओर प्रारंभिक कदम
- **सीखना सुनिश्चित करने की पहल**

**इनके अन्तर्गत प्रगति आंकने के लिये जिन सूचकों का प्रयोग कर सकते हैं वे आगे दिये गये हैं।**

सहज सम्बंध एवं आकर्षक माहौल

G1 कक्षा में ऐसा माहौल है कि बच्चे बिना डरे अपनी बात कहते हैं, हो रही प्रक्रियाओं में भाग लेते हैं, और कोई भी छूटता हुआ नहीं दिखता।

A	B	C	D
शिक्षक सुनिश्चित करते हैं कि हर बच्चे को दिन में मौके मिलें, और जो भाग नहीं ले पा रहे हैं, उनको शामिल करने के लिये विशेष प्रयास करते हैं।	शिक्षक बच्चों को बोलने और भाग लेने के मौके देते हैं, लेकिन कुछ बच्चे (१-४) बिल्कुल भाग नहीं ले रहे हैं।	कुछ बच्चे बोल रहे हैं, लेकिन कुछ समूह छूटे ही पड़े हैं।	ज़्यादातर बच्चे डरे सहमे दिखते हैं, बोल नहीं रहे हैं।

गतिविधि आधारित शिक्षण की ओर प्रारंभिक कदम

**G2 बच्चों के सामने रोचक और चुनौतीपूर्ण संदर्भ/प्रसंग/अनुभव रच कर सीखने की प्रक्रिया शुरू करते हैं।**

A	B	C	D
सीखने की प्रक्रिया में पूरे समय बच्चों को जोड़े रख पाते हैं - रुचिकर क्रियाओं में माध्यम से।	बच्चों को जोड़ने के लिये रुचिकर व चुनौतीपूर्ण अनुभव पैदा कर शुरू करते हैं।	कभी-कभार एक-दो उदाहरण दे कर समझाने की कोशिश करते हैं।	बच्चों में रुचि पैदा करने का प्रयास नहीं करते हैं।

**G3 बच्चों को दिन के कुछ समय छोटे समूहों में मिल कर काम करने के मौके मिलते हैं।**

A	B	C	D
बच्चे छोटे समूहों में मिल कर निर्णय व जिम्मेदारी लेते हुए कार्य करते हैं।	बच्चों को छोटे समूहों में मिलकर काम करने के मौके मिलते हैं।	बच्चे समूहों में बैठते तो हैं लेकिन मिल कर सोचते या कार्य करते नहीं दिखते।	बच्चों के समूह कार्य के मौके नहीं मिलते।

**G4 शिक्षक ठोस सामग्री, AV सामग्री एवं पुस्कालय की पुस्तकें बच्चों के हाथ में देकर प्रयोग करते हैं।**

A	B	C	D
शिक्षक स्वयं या बच्चों के साथ मिल कर सामग्री बनाते/जुटाते हैं और बच्चों को अपने आप प्रयोग करने के लिये प्रोत्साहित करते हैं।	शिक्षक बच्चों को अपने हाथों से सामग्री के साथ अलग-अलग रोचक कार्य का मौका देते हैं, खुद भी पढ़कर सुनाते/चर्चा करते हैं।	शिक्षक सामग्री का प्रयोग प्रदर्शन के लिये अधिक करते हैं।	शिक्षक पाठ्यपुस्तक के अलावा और सामग्री का प्रयोग नहीं करते।

**सीखना सुनिश्चित करने की पहल**

G5 शिक्षक द्वारा शिक्षण योजना बनायी जाती है और सामान्यतया उसके अनुसार शिक्षण किया जाता है

A	B	C	D
योजना बनाते हैं, पालन करते हैं, उसमें बच्चों की विविध ज़रूरतों के लिये विकल्प भी रखते हैं।	योजना बनाकर और उसके अनुसार पढ़ाने का स्पष्ट प्रयास करते हैं।	योजना बनाते हैं लेकिन उसका उपयोग कम ही करते हैं।	शिक्षक योजना नहीं बनाते हैं।

G6 शिक्षक ने बच्चों की प्रोफाइल भरी है, और उनका उपयोग शिक्षण योजना के लिये किया है। उसके आधार पर विशेष शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले बच्चों के सीखने के लिए वे विशेष अवसर बनाते हैं।

A	B	C	D
प्रोफाइल के आधार पर योजना बना कर प्रयोग कर रहे हैं, और विशेष शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले बच्चों के सीखने के लिए अवसर बना रहे हैं।	प्रोफाइल भरी है, और उसके आधार पर शिक्षण योजना बना कर प्रयोग कर रहे हैं।	प्रोफाइल कुछ हद तक बनाई है लेकिन प्रयोग में नहीं है।	बच्चों की प्रोफाइल नहीं बनाई है।

G7 शिक्षक सभी बच्चों का नियमित रूप से आंकलन कर रेकार्ड रखते हैं।

A	B	C	D
नियमित आंकलन के रिकार्ड का विश्लेषण कर शिक्षण नियोजन बेहतर कर पा रहे हैं।	नियमित आंकलन कर रिकार्ड रखा जा रहा है।	आंकलन नियमित होता है पर रिकार्ड पूरी तरह नहीं होता।	आंकलन नियमित नहीं होता है।

**भाषा शिक्षण**

भाषा शिक्षण में मौखिक भाषा में अभिव्यक्ति, विभिन्न मानसिक व भाषाई क्रियाओं के सहारे पठन क्षमता की ओर बढ़ने पर जोर है (मौखिक भाषा का विकास नहीं होने का प्रभाव पठन क्षमता के विकास पर पड़ता है)। बच्चों को विविध संदर्भों में भाषा के उद्देश्यपूर्ण प्रयोग के मौके मिलने चाहिये। बच्चों की सहभागिता ही उनके भाषा सीखने का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है।

L1 शिक्षक बच्चों को (वस्तुओं, चित्रों, प्रक्रियाओं, अनुभवों, विचारों और भावनाओं पर) अभिव्यक्ति के मौके देते हैं, वार्तालाप करते हैं, ज़रूरत पड़े तो उनकी कही बातों को ब्लैकबोर्ड पर लिख कर उसे पढ़ना सिखाने के लिये प्रयोग करते हैं।

A	B	C	D
शिक्षक बच्चों द्वारा कही बातों को ब्लैकबोर्ड पर लिख कर उसे पढ़ना सिखाने के लिये प्रयोग करते हैं। वे बच्चों के लिये आपस में चर्चा कर के निष्कर्ष तक पहुंचने के मौके पैदा करता हैं। (अगर वाले प्रश्नों का भी प्रयोग होता है)	शिक्षक खुले प्रश्न करते हैं, बच्चों के लिये सोच के बोलने के मौके पैदा करते हैं, उनकी कही बातों पर प्रतिक्रिया जाहिर कर उन्हें बोलने के प्रेरित करते हैं ताकि वार्तालाप हो सके। (सूची प्रश्न, कैसे, क्यों – इन प्रश्नों का उपयोग होता है)	शिक्षक बच्चों से प्रश्न पूछते हैं, लेकिन अधिकतर ऐसे जानकारी प्रधान प्रश्न है जिनका एक ही उत्तर होता है। (क्या, किधर, कब, कौन, कहां – ये प्रश्न अधिक होते हैं)	बच्चों को कभी-कभार ही बोलने का मौका मिलता है।

L2 शिक्षक बच्चों को पठित सामग्री/पाठ से संपर्क कराने के पहले उसका संदर्भ रचते हैं और सुरागों के सहारे पहले स्वयं से उसे भेदने के मौके देते हैं।

A	B	C	D
वे पाठ्य सामग्री को पढ़ाने के पहले बच्चों को खुद ही उस सामग्री के बारे में अपने अनुमान व प्रश्न बनाने का मौका देते हैं, उन पर चर्चा करते हैं, ज़रूरत पड़ने पर अन्य सुराग देते हैं, फिर उसे पढ़ाना शुरू करते हैं।	पाठ्य सामग्री पढ़ाने के पहले उसका संदर्भ रचते हैं और सुरागों के सहारे पहले स्वयं से उसे भेदने के मौके देते हैं, उसके बाद ही पढ़ाते हैं।	पाठ्य सामग्री पढ़ाने के पहले उसका परिचय देते हैं।	शिक्षक सीधे पाठ्य सामग्री को पढ़ाना शुरू कर देते हैं।

L3 बच्चों को पुस्तकालय से पुस्तकें ऐक्शन सहित पढ़ कर सुनाते हैं, चर्चा करते हैं, फिर स्वयं पढ़ने का मौका देते हैं।

A	B	C	D
पुस्तकालय को रोज कम से कम एक गतिविधि में ज़रूर शामिल करते हैं।	पुस्तकालय से अलग-अलग पुस्तकों को चुन कर सप्ताह में 3 या अधिक बार, ऐक्शन सहित पढ़ कर सुनाते हैं, चर्चा करते हैं, फिर स्वयं पढ़ने का मौका देते हैं।	बच्चों को पुस्तकालय की पुस्तकों को लेकर देखने-पलटने और पढ़ने के नियमित अवसर देते हैं।	पुस्तकालय का उपयोग नहीं करते।

L4 बच्चों को चित्र/संकेत बना कर या लिख कर अपनी बात व्यक्त करने के मौके देते हैं।

A	B	C	D
बच्चों को प्रेरित करते हैं कि वे सोच कर चित्रों और शब्दों/वाक्यों में लिखत अभिव्यक्ति करें। इसके लिये शिक्षक मौके पैदा करते हैं, बच्चों को सहयोग देते हैं, और उनकी रचनाओं को प्रदर्शित करते हैं।	बच्चों को स्वतंत्र चित्र व लेखन पूर्व अभ्यास करने के मौके मिलते हैं। चित्रों, संकेतों, अक्षरों या शब्दों को लिखकर अपनी बात व्यक्त करने के मौके देते हैं।	लेखन का काम पाठों में दिये गये अभ्यासों तक ही सीमित है।	लेखन के नाम पर अधिकतर नकल उतारने का काम होता है।

### गणित शिक्षण

गणित में गणितीय अवधारणाओं तक पहुंचने के लिये ठोस वस्तुओं (और बाद में चित्रों, फिर चिह्नों) के साथ विभिन्न क्रियाओं पर जोर है। साथ ही, अपने दैनिक जीवन में गणित देख पाना और सामान्य क्रियाओं से गणितीय अवधारणाओं को जोड़ पाना महत्वपूर्ण है।

M1 स्थानीय पर्यावरण में (ठोस सामग्री/वस्तुओं) का उपयोग गणित की विभिन्न अवधारणाओं को सीखने-सिखाने के दौरान किया जाता है।

A	B	C	D
शिक्षक ई एल पी एस क्रम का उपयुक्त उपयोग कर अवधारणाओं कि समझ विकसित करते हैं।	शिक्षक बच्चों को ठोस सामग्री/वस्तुओं के साथ विभिन्न क्रियायें और गतिविधियां कराते हैं।	शिक्षक वस्तुओं और टी एल एम का प्रदर्शन कर के समझाते हैं।	केवल पाठ्यपुस्तक से पढ़ाया जा रहा है।

M2 सीखी गई गणितीय अवधारणाओं और कौशलों का शिक्षक द्वारा बच्चों के वास्तविक जीवन की परिचित अवधारणाओं से संबंध जोड़ा जाता है।

A	B	C	D
सीखी हुई अवधारणाओं को दैनिक जीवन में उपयोग के लिये शिक्षक विशेष कार्य / गतिविधियां / प्रोजेक्ट देते हैं।	बच्चों को मौका दिया जाता है कि वे अपने जीवन से उदाहरण और अनुभव साझा करें।	कभी-कभार शिक्षक स्थानीय उदाहरण अपनी ओर से देते हैं।	केवल पाठ्यपुस्तक में दिये गये उदाहरणों से काम लिया जाता है।

### परिवेशीय अध्ययन

इस विषय में हमारा जोर तथ्यों पर नहीं बल्कि तथ्यों के बीच संबंधों पर है। इंद्रियों के माध्यम से जानकारी हासिल करना (अवलोकन करना) और इसके आधार पर नतीजों तक पहुंचना महत्वपूर्ण है। परिवेश को समझना और उससे अपना संबंध समझ पाना विषय का उद्देश्य है।

E1 अपने इलाके में परिवेश के विभिन्न घटकों/पहलुओं (जीव-जन्तु, पेड़-पौधे, नदी-तालाब, लोग, आदि) में आपसी संबंधों को समझना।

A	B	C	D
बच्चे अपने परिवेश के बारे में जानकारी और समझ विभिन्न रूपों में दर्ज करते हैं (लेखन, चित्र, नक्शे, ग्राफ आदि), प्रदर्शित करते हैं और परिवेशीय पहलुओं में आपसी संबंधों पर बात करने के मौके पाते हैं।	शिक्षक परिवेश के विभिन्न घटकों/पहलुओं के बारे में खोजबीन करने और उनके आपसी संबंधों को समझने के मौके रचते हैं।	परिवेशीय जानकारी को शामिल किया जा रहा है, लेकिन उन तथ्यों के बीच संबंधों पर ज़ोर नहीं है।	केवल पाठ्यपुस्तक के पाठों में दिये गये तथ्यों और जानकारी पर ज़ोर है, उसमें दी गयी गतिविधियां नहीं कराई जाती।

E2 कक्षा में बच्चों को अवलोकन के पर्याप्त मौके हैं और वे अवलोकनों का विश्लेषण करते हुए नतीजे तक पहुंचने की कोशिश करते हैं।

A	B	C	D
बच्चों को अवलोकन के आधार पर अपने द्वारा दर्ज की गई जानकारी का विश्लेषण करने के मौके मिलते हैं।	शिक्षक सुनियोजित तरह से बच्चों को तरह-तरह के अवलोकन करने और उन्हें दर्ज करने के मौके देते हैं।	पढ़ाने के दौरान कभी-कभी शिक्षक कुछ अवलोकन करने के लिये कहते हैं।	कक्षा/स्कूल/घर में स्वयं अवलोकन करने के मौके नहीं दिये जाते।